BHARATI INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & DEVELOPMENT (BIJMRD)

(Open Access Peer-Reviewed International Journal)

DOI Link : https://doi.org/10.70798/Bijmrd/03090032

Available Online: www.bijmrd.com|BIJMRD Volume: 3| Issue: 09| September 2025| e-ISSN: 2584-1890

मध्यकालीन भारत में संगीत नवाचार: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

सुजाता मजूमदार[1] & डॉ. रूपा सिन्हा[2]

1. शोधार्थी, संगीत विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत।
2. सह-प्राध्यापक, संगीत विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत।

सार:-

संगीत का इतिहास संस्कृति का एक हिस्सा है। यह शोध मध्यकालीन भारत में संगीत के इतिहास का पता लगाता है। मध्यकालीन भारत मुस्लिम शासकों और मुगल शासकों पर आधारित है। यह भारतीय संगीत की उत्पत्ति का वर्णन करता है। अर्थात् प्रागैतिहासिक, उत्तर-इतिहास और वैदिक। यह शोध उस राजा का पता लगाता है जिसकी संगीत में रुचि थी। शोधकर्ता मुस्लिम और मुगल काल के कई विद्वानों पर भी चर्चा करता है। संगीत के वाद्ययंत्र इस अध्ययन का एक हिस्सा होने चाहिए। मध्यकालीन भारत की संगीत यात्रा विभिन्न प्रकार के संगीत पर भी चर्चा करती है। मध्यकालीन भारत के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक वक्ती और सूफी संगीत है। महान वक्ती संत और सूफी संत संगीत में शामिल थे। उन्होंने संगीत की नई शैलियों का परिचय दिया। वाक्तिवाद के विद्वान जैसेचैतन्य, मीराबाई, रामानंद, कबीर आदि। सूफी विद्वान जैसे निजामुद्दीन औलिया, मैनुद्दीन चिश्ती, वक्तारकाकी आदि। राजा भी सूफी या वाक्तिवाद से प्रभावित थे। यह पता चला है कि संगीत केवल शाहीदरबार का ही था। विद्वानों को किसी विशेष राजवंश के राजा का संरक्षण प्राप्त था।

मुख्य शब्द: *संगीत यात्रा, मध्यकालीन भारत, मध्यकालीन संगीत।*

परिचय:-

संगीत एक ऐसी कला है जिसे बहुत कम लोग ही प्राप्त कर पाते हैं। संगीत की यह उत्कृष्टता हमारे इतिहास को प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध बनाती है। इसकी शुरुआत भारत में सबसे पहले सेव के माध्यम से हुई थी। फिर यह मध्यकालीन भारत में भी प्रसिद्ध रहा। प्राचीन काल से ही संगीत हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग रहा है। हड़प्पा सभ्यता, वैदिक और उत्तर वैदिक सभ्यता में संगीत के अनेक प्रमाण मिले हैं। प्राचीन काल में वीणा, दुंदुभी, ढोल आदि जैसे वाद्य यंत्र मिले हैं। भारत के मुस्लिम काल में भी संगीत प्रसिद्ध था। अमीर खुसरो, जयदेव, चित्तौड़ महाप्रभु, मीराबाई, कबीर आदि जैसे कई विद्वानों ने संगीत को बहुत संरक्षण दिया। मुगल इतिहासकार शासकों के संगीत अनुभव की भी चर्चा करते हैं। बाबर से लेकर औरंगजेब तक संगीत इतिहास के प्रसिद्ध भागों में से एक रहा है। अकबर मुगल संगीत का प्रसिद्ध नाम था। सूरदास संगीत के लिए प्रसिद्ध हैं। मुगल दरबार के सबसे महान संगीतकार तानसेन थे। उन्होंने संगीत पर कई राग लिखे। 36 संगीतकार अकबर के दरबार में थे। औरंगजेब ने दरबारी संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था। वह संगीत से एक बड़ी दूरी बनाना चाहता था, लेकिन यह बहुत दिलचस्प है कि औरंगजेब महान वीणा वादक था और संयोग से संगीत पर कई किताबें औरंगजेब काल में प्रकाशित

हुईं। बाद के मुगल शासक भी संगीत में रुचि रखते थे। मोहम्मद साहा संगीत के महान संरक्षक थे। अंतिम मुगल शासक बहादुर साहा जफर भी एक गायक थे। वह कई गीतों के लेखक थे।

भारतीय संगीत की उत्पत्ति:

भारतीय संगीत का ऐतिहासिक अध्ययन विभिन्न कालखंडों में भारतीय संगीत के विकास के विभिन्न स्तरों की सार्वभौमिक महारत को दर्शाता है। यह व्यक्ति को गीत, धुन, संगीत वाद्ययंत्र और नृत्य की वास्तविक संरचना, प्रकार और स्वरूप को समझने का पूरा अवसर प्रदान करता है। भारत भी प्राचीनतम आदिम काल से लेकर वर्तमान समय तक संगीत के इतिहास को बनाने में पीछे नहीं है। वर्तमान समय तक का काल भारतीय संगीत के इतिहास में संगीत की सामग्री से भरा पड़ा है और इन्हें विभिन्न स्रोतों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। सबसे पहले, विभिन्न समयों के विभिन्न स्रोतों द्वारा संगीत पर रचित त्रयी, जिन्हें भारत के प्रामाणिक इतिहास के निर्माण की मुख्य सामग्री के रूप में लिया जा सकता है। दूसरे, शैलकृत मंदिर और शिलालेख, तीसरे, संगीत पर विदेशी लेखकों का लेखन और साथ ही अन्य देशों के संगीत का इतिहास। चौथा, संगीतकारों और संगीतशास्त्रियों की डायरियाँ, स्थानीय परंपरा ने मूल रूप से संगीत की लोककथाएँ और दंतकथाएँ प्रसारित कीं। भारतीय संगीत के इतिहास का अध्ययन करने के लिए, भारत की संपूर्ण संस्कृति और सभ्यता को कई कालखंडों में विभाजित करना अनिवार्य है, जैसे पूर्व-वैदिक और वैदिक, हिंदू, बौद्ध,महामहिम, ब्रिटिश, ब्रिटिशोत्तर और आधुनिक।भारत के इतिहास में हम पाते हैं कि सभ्य व्यापारी अनाथ वास्तव में सुदूर अतीत के प्रागैतिहासिक सिंधु घाटी के निवासी थे। कुछ लोगों का मानना है कि ये निर्माता आर्य थे, वैदिक काल के आर्य स्वयं भारत के मूल निवासी थे और कभी मध्य एशिया या भारत के बाहर किसी अन्य भाग से नहीं आए थे।ऋग्वैदिक युग (3000-2000 ईसा पूर्व) में हमें आर्य लोगों के बीच राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक संगठन के प्रमाण मिलते हैं। उनके विशाल प्रमाण निस्संदेह साबित करते हैं कि वे उस समय के सबसे उन्नत लोग थे, जो यज्ञ और धार्मिक अनुष्ठान करते थे और विभिन्न से नए सिद्धांतों के साथ गीत गाते थे। गीतों को नियंत्रित करने वाले नियम और नियम शिक्षाओं, प्रातिशाक्य और ब्राह्मण स्तोत्रों में पाए जाते हैं और उनमें वैदिक काल के संगीत के भी प्रचुर संदर्भ मिलते हैं। विभिन्न प्रकार के वीणा और ढोल का भी वैदिक साहित्य में वर्णन किया गया है। सौ तारों वाली वीणा (वन) कश्यपी या कच्छपी कसौं, आदि, और आदिम ढोल जैसे भूमि, धुंडब्बी, आदि। प्रोफेसर मैकडोनेल, कीथ, विंटरनिट्ज़, कैलैंड, बर्नेल, जैकोबी, वेबर, शास्त्री, आप्टे आदि ने वैदिक साहित्य पर चर्चा करते हुए गायन और वाद्य संगीत दोनों का उल्लेख किया है। गृह्यसूत्र पर टिप्पणी करते हुए, डॉ. आप्टे ने वैदिक लोगों द्वारा विकसित संगीत का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा है, "तीनों प्रकार के संगीत (नोरत्यम, गीतम, चतुर्म) के साथ-साथ रथ दौड़ और जुआ इस (सूत्र) काल के प्रमुख मनोरंजन बने रहे।" सामवेद और वलयना ग्रब्यस्त्र में हमें सीमन्तोन्नयन समारोह के संबंध में वीणा बजाने, नृत्य करने और गाने का वर्णन मिलता है। यह सत्य है कि वैदिक लोगों ने व्यवस्थित रूप से कला संगीत का संवर्धन किया। उन्होंने पूर्व-वैदिक और वैदिक लोगों से संगीत उधार लिया और इस प्रकार एक ऐसी संस्कृति परंपरा छोड़ी जिसने संगीत कला को समृद्ध किया। प्रागैतिहासिक सिंधु घाटी के शहरों की पद्धतियों की उत्पत्ति ने दुनिया के लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है। कुछ अपरिष्कृत प्रकार के पाइप, वीणा और विभिन्न आकारों के ढोल, एक नग्न नर्तकी की कांस्य प्रतिमा के साथ, कम से कम पाँच हज़ार साल पहले समाज में संगीत के प्रचलन को प्रमाणित करते हैं। वैदिक संगीत से हमारा तात्पर्य धुनों वाले सामनों से है। जब वाद्य यंत्रों को धुनों पर स्थापित किया जाता था, तब उन्हें वैदिक संगीत सामगान कहा जाता था। जैसा कि हम जानते हैं, सिंधु घाटी सभ्यता से ही भारत के दुनिया के कई देशों के साथ व्यापारिक संबंध थे। वैदिक युग में समुद्र और स्थल दोनों मार्गों से व्यापार का उपयोग जारी रहा और व्यापार एवं संस्कृति संबंध भी बने रहे। अशोक के शासनकाल में ये संबंध और भी बढ़े, जिन्होंने बौद्ध धर्म का प्रसार न केवल एशिया में बल्कि अन्य महाद्वीपों में भी किया। भारत में मुसलमानों का आगमन 7वीं-8वीं शताब्दी ईस्वी से शुरू हुआ। मुस्लिम विजय का भारतीय कला और संस्कृति पर गंभीर प्रभाव पड़ा। प्रत्येक विजय के बाद कई मंदिर पुस्तकालय और बहुमूल्य कृतियाँ नष्ट कर दी गईं। हिंदुओं का जबरन धर्म परिवर्तन किया गया और उन्हें शाही संरक्षण प्रदान किया गया। फिर भी कई मुस्लिम शासक ऐसे थे जो संगीत और ललित कलाओं के महान संरक्षक थे और प्रतिभाशाली लोगों को प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया जिसमें संगीतकारों के अलावा राजकुमारों, रानियों, दरबारियों और अन्य लोगों ने भी भाग लिया। वे अपने साथ फ़ारसी, अरबी और तुर्क संस्कृति लेकर आए और इसे समृद्ध बनाया। अमीर खुसरो ने भारत के संगीत और साहित्य के विकास में उल्लेखनीय कार्य किया। कहा जाता

है कि हुमायूँ ने भारतीय कला में फ़ारसी प्रभाव डाला, अकबर संगीत और ललित कलाओं का महान संरक्षक था। उसके दरबार में कई संगीतकार फले-फूले। जहाँगीर के शासनकाल में चित्रकला अपने चरम पर थी। भक्ति युग (14वीं और 18वीं शताब्दी ईस्वी में धर्मत्याग के सिद्धांत का काल) के दौरान, भारत के विभिन्न हिस्सों में कई महान कवि, गायक और संत फले-फूले। वे न केवल महान संत थे, बल्कि कुशल संगीतकार भी थे और उन्होंने भारतीय संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मध्यकालीन भारत में संगीत:-

मुस्लिम काल 12वीं शताब्दी ईस्वी से शुरू होता है। मंगोल तुर्क और अन्य ने पिछली शताब्दियों में भारत पर अक्सर आक्रमण किया। जब वे भारत आए तो उन्होंने हिंदुओं का नरसंहार किया और मंदिरों और पुस्तकालयों को नष्ट कर दिया। इसके कारण बहुत सारी मूल्यवान सांस्कृतिक जानकारी नष्ट हो गई, कई पुस्तकें नष्ट हो गईं और हमने जानकारी खो दी। जब हम संगीत की अवधारणा का अध्ययन करते हैं तो हमें द्वितीयक आंकड़ों पर निर्भर रहना पड़ता है। आक्रमणकारियों ने संक्षेप में बस्तियों को बदल दिया। उन्होंने 775 ईस्वी में पंजाब के कुछ प्रांतों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने पूरे भारत में अपना शासन फैलाया। इस प्रकार हिंदू और मुस्लिम संस्कृति मिश्रित है। वे सभी भारत की सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि रखते हैं। अधिकांश मुस्लिम शासक महान थे। वे अत्यधिक बौद्धिक और संगीत के महान प्रेमी थे। इसलिए शाही दरबारों में संगीत कलाकारों को उदारतापूर्वक संरक्षण दिया जाता था। उस समय हिंदुस्तानी संगीत का तीव्र विकास हो रहा था। सांस्कृतिक घरांग पद्धति भी इसी काल में विकसित हुई।

समीक्षा साहित्य:-

- अमीर खुसरो: एक कवि-संगीतकार जिन्हें हिंदुस्तानी संगीत को व्यवस्थित करने और नए रागों की शुरुआत करने का श्रेय दिया जाता है। उन्हें कव्वाली शैली का आविष्कारक भी माना जाता है।

- तानसेन: अकबर के दरबार के एक महान संगीतकार, जो अपनी असाधारण आवाज़ और नवीन रचनाओं के लिए जाने जाते थे। उन्होंने मियाँ मल्हार और मियाँ की तोरी जैसे रागों की रचना की।

- पुरंदर दास: कर्नाटक संगीत के अग्रदूत, जिन्हें इस शैली की मूल संरचना बनाने और संगीत शिक्षा में योगदान देने का श्रेय दिया जाता है।

उद्देश्य:-

- भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास पर चर्चा: मध्यकाल के दौरान हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत परंपराओं में हुए परिवर्तनों और विकास का परीक्षण।

- प्रमुख हस्तियों और उनके योगदानों पर प्रकाश डालना: पाठकों को मध्यकालीन भारतीय संगीत को आकार देने वाले प्रभावशाली संगीतकारों, रचनाकारों और सिद्धांतकारों, जैसे अमीर खुसरो, तानसेन और पुरंदर दास, से परिचित कराना।

- सांस्कृतिक आदान-प्रदान के प्रभाव का अन्वेषण: विश्लेषण करें कि कैसे फ़ारसी, इस्लामी और अन्य सांस्कृतिक प्रभावों के साथ अंतःक्रियाओं ने भारतीय संगीत को समृद्ध किया और नए वाद्ययंत्रों, रागों और संगीत रूपों को प्रस्तुत किया।

- संगीत नवाचारों और उनकी विरासत की पहचान: महत्वपूर्ण संगीत नवाचारों, जैसे नए रागों, तालों और संगीत रूपों का विकास और भारतीय शास्त्रीय संगीत पर उनके स्थायी प्रभाव पर प्रकाश डालना।

- ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करना: मध्यकालीन भारतीय संगीत को उस समय के व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में रखना, जिसमें साम्राज्यों का उत्थान और पतन और संगीत प्रथाओं पर राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव शामिल है।

अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा:-

"मध्यकालीन भारत में संगीत नवाचार: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य" का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

सांस्कृतिक विकास को समझना

- **भारत की संगीत विरासत पर अंतर्दृष्टि**: यह अध्ययन भारत की समृद्ध संगीत विरासत और समय के साथ इसके विकास की गहरी समझ प्रदान करता है।

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रभाव**: यह फ़ारसी, इस्लामी और स्वदेशी भारतीय परंपराओं सहित विभिन्न संस्कृतियों के बीच संगीत संबंधी विचारों और प्रभावों के आदान-प्रदान पर प्रकाश डालता है।

ऐतिहासिक संदर्भीकरण

- **मध्यकालीन काल का महत्व:** यह अध्ययन मध्यकालीन काल के सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ की सूक्ष्म समझ प्रदान करता है, जिसने भारतीय संगीत को आकार दिया।

- **ऐतिहासिक घटनाओं का प्रभाव**: यह इस बात की जाँच करता है कि साम्राज्यों के उत्थान और पतन जैसी ऐतिहासिक घटनाओं ने संगीत के विकास को कैसे प्रभावित किया।

संगीत नवाचार और विरासत

- **नए संगीत रूपों का विकास**: यह अध्ययन नए संगीत रूपों, रागों और तालों के विकास की पड़ताल करता है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रभावित करते रहे हैं।

- **भारतीय संगीत पर स्थायी प्रभाव**: यह दर्शाता है कि कैसे मध्ययुगीन संगीत नवाचार भारतीय संगीत को आकार देते रहे हैं और यह सुनिश्चित करते रहे हैं कि उनकी विरासत चिरस्थायी रहे।

अंतर्विषयक अंतर्दृष्टि

- **संगीत, इतिहास और संस्कृति का अंतर्संबंध:** यह अध्ययन संगीत, इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिकता के अंतर्संबंधों पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे यह अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक हो जाता है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को समझना**: यह मध्यकालीन भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता पर एक नज़र डालता है, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की जटिलताओं पर प्रकाश डालता है।

- **भारत की संगीत परंपराओं का संरक्षण:** यह अध्ययन मध्यकालीन संगीत नवाचारों का दस्तावेजीकरण और विश्लेषण करके भारत की संगीत परंपराओं के संरक्षण में योगदान देता है।

- **सांस्कृतिक प्रशंसा को बढ़ावा देना**: यह भारत की समृद्ध संगीत विरासत के प्रति प्रशंसा को बढ़ावा देता है, और आगे के अन्वेषण और अध्ययन को प्रोत्साहित करता है।

"मध्यकालीन भारत में संगीत नवाचार: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य" का अध्ययन करके, शोधकर्ता भारत की संगीत विरासत, उसके विकास और भारतीय शास्त्रीय संगीत पर उसके स्थायी प्रभाव की गहरी समझ प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष:-

मध्यकालीन भारत में, विशेष रूप से फ़ारसी और इस्लामी संगीत परंपराओं के प्रभाव से, महत्वपूर्ण संगीत नवाचार हुए। कुछ प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

- **नए रागों का उदय**: फ़ारसी प्रभाव ने तुरुश्का तोड़ी और तुरुश्का गौड़ जैसे नए रागों के निर्माण को जन्म दिया, जिससे संगीत शैलियों का सम्मिश्रण प्रदर्शित हुआ।

- **संगीत शैलियों का विकास**: भक्ति संगीत की एक शैली, कव्वाली, सूफी दरगाहों और सभाओं में लोकप्रिय हुई। ख़याल, तराना, दादरा और ग़ज़ल जैसी अन्य शैलियाँ भी उभरीं।

- **वाद्य यंत्रों में नवाचार:** इस काल में सितार और तबला जैसे वाद्य यंत्रों को प्रमुखता मिली।

- **हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत पर प्रभाव**: मध्यकाल में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत परंपराओं में विविधता देखी गई, और दोनों ने अपनी विशिष्ट विशेषताएँ विकसित कीं।

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** मध्यकाल में भारतीय और फ़ारसी संगीत परंपराओं के बीच महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ, जिससे नई शैलियों और शैलियों का विकास हुआ।

- **स्थायी विरासत:** इस अवधि के संगीत नवाचारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रभावित करना जारी रखा है, जिसके कई राग और रूप आज भी प्रदर्शित किए जाते हैं।

उपसंहार:-

भारत में मध्यकाल संगीत के लिए एक परिवर्तनकारी युग था, जिसकी विशेषता विविध प्रभावों का संश्लेषण था, और यह "नवाचार की भट्टी" के रूप में कार्य करता था जिसने आधुनिक भारतीय शास्त्रीय संगीत को आकार दिया। इस युग में ख़याल और कव्वाली जैसी नई शैलियों का उदय, हिंदुस्तानी और कर्नाटक परंपराओं में औपचारिक विभाजन और सितार व तबला जैसे वाद्ययंत्रों का आविष्कार हुआ।मध्यकालीन भारत भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास में एक महत्वपूर्ण काल था, जो प्रभावशाली संगीतकारों के महत्वपूर्ण नवाचारों और योगदानों से चिह्नित था। फ़ारसी और इस्लामी संगीत परंपराओं के स्वदेशी भारतीय शैलियों के साथ सम्मिश्रण ने नए रागों, संगीत रूपों और वाद्ययंत्रों के विकास को जन्म दिया।

ग्रंथ सूची:-

- एराली, अब्राहम, क्रोध का युग: दिल्ली सल्तनत का इतिहास। पेंगुइन यूके, 2015.
- गांगुली, अनिल बरन, प्राचीन भारत में ललित कलाएँ। अभिनव प्रकाशन, 1978.
- खन्ना, मीनाक्षी (सं.), मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास। सोशल साइंस प्रेस, 2006.
- मैसी, रेजिनाल्ड और जमीला मैसी, भारत का संगीत। अभिनव प्रकाशन, 1995.
- खासनोबिस, बरनश्री, पाठ के रूप में बंदिश: 'सदारंग' और 'अदारंग' द्वारा खयाल रचनाओं का पुनर्पाठ। टेलर एंड फ्रांसिस, 2024.
- पैकियोला, पाओलो। राजा-देवता का भारतीय ढोल और नाथद्वारा का पखावज, रूटलेज, 2020.

Citation: **मजूमदार. सु. & सिन्हा. डॉ. रू.,** (2025) "मध्यकालीन भारत में संगीत नवाचार: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य", *Bharati International Journal of Multidisciplinary Research & Development (BIJMRD)*, Vol-3, Issue-09, September-2025.